तीन दोस्त

मोहन राकेश

सुनहरा मुरगा अपनी तरह का एक ही था । इसलिए बहुत से कसाइयों की नजर उस पर थी । काला बंदर भी अपनी तरह का एक ही था । इसलिए बहुत से चिड़ियाघर के लोग उसे पकड़ पाने की कोशिश में थे ।

लाल अमरुद के पेड़ पर पूरे-पूरे लाल अमरूद उगते थे । उस जैसा भी कोई दूसरा पेड़ वहाँ नहीं था । इसलिए फलवालों से लेकर स्कूल के बच्चों तक को उसके अमरुदों का लालच था ।

पर उन तीनों ने मिलकर एक ऐसी योजना बना रखी थी कि कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता था ।

जब कोई कसाई मुरगे को पकड़ने के लिए आता, तो पेड़ उसे लुभाने के लिए दो-तीन पके अमरूद नीचे टपका देता । उन अमरूदों की खुशबू ही ऐसी थी कि कसाई पहले अमरूद चखने में लग जाता । उस बीच बंदर दो-एक कच्चे अमरूद तोड़कर इस तरह उसके सिर का निशाना बनाता कि कसाई अपना होश भूल जाता ।

आखिर जब वह ऊपर की तरफ देखता, तो बंदर मुरगे को पीठ पर बिठाए मुँह बिचकाता नजर आता । वह हारकर वहाँ से चलने लगता तो उसे पता चलता कि उसका थैला भी गायब है । थैला उसके औजारों समेत

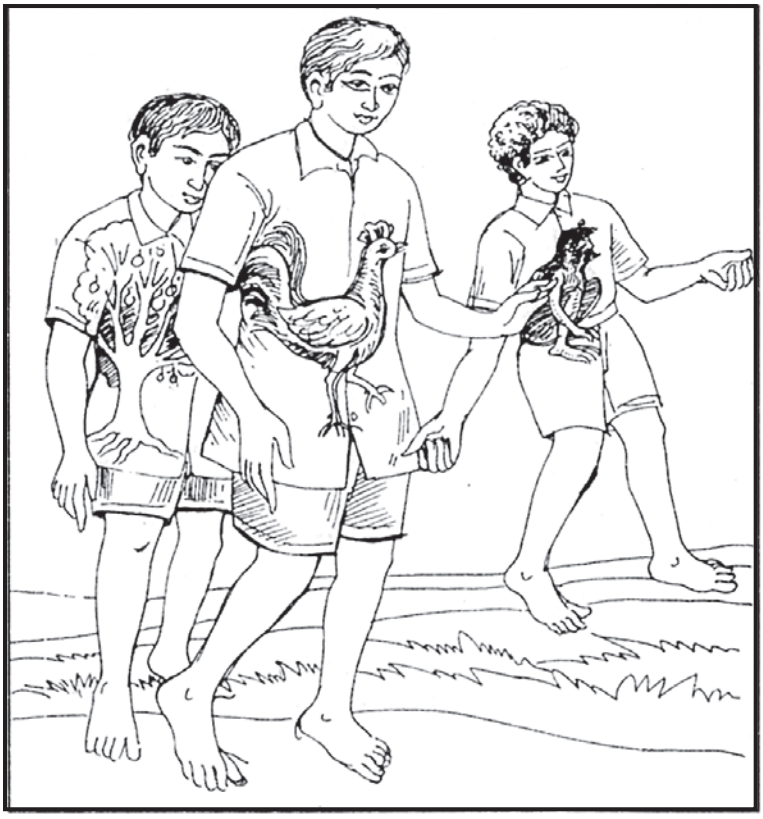

पेड़ की सबसे ऊँची शाखों पर लटक रहा होता । साथ ही पेड़ साँय-साँय करता उसकी हालत का मजा ले रहा होता ।

जब चिड़ियाघर के लोग बंदर को घेरने के लिए आते, तब पेड़ उसे अपनी पत्तियों और शाखों में छिपा लेता । किसी की उस पर नजर ही न पड़ती । नीचे मुरगा जोर-जोर से पंख फड़फड़ा कर इतनी धूल उड़ा देता कि उनके लिए वहाँ खड़े होकर साँस लेना मुश्किल हो जाता । आखिर वे वहाँ से हटने लगते तो पेड़ अपने सबसे पिलपिले अमरूद नीचे टपका कर उन्हें फिसला देता । वे किसी तरह गिरते पड़ते वहाँ से लौटते तो उन्हें पता चलता कि उनका

बंदर पकड़ने का जाल मुरगे की चोंच में है और मुरगा पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर बैठा है । थोड़ी दूर जाने पर उन्हें पीछे से मुरगे की बांग सुनाई दे जाती - 'कुक्कडूँ कूँ !' लगता, जैसे मुरगा उनका मज़ाक उड़ा रहा हो । इसी तरह जब फलवाले या स्कूल के बच्चे पेड़ से अमरूद तोड़ने के लिए आते, तब पहले उनका सामना बंदर से होता । बंदर इस तरह उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटता और उन्हें डराता-धमकाता कि उनका पेड़ के नज़दीक जाने का हौसला ही न पड़ता । अगर उन लोगों के पास अपना कोई खाने-पीने का सामान होता, तो उसे भी वह चट कर जाता । मौका लगने पर किसी के बाल नोच देता । किसी के कान उमेठ देता । फिर भी वे लोग पेड़ के नज़दीक पहुँच जाते, तो वहाँ उन्हें मुरगा बेजान-सा तड़पता नज़र आता । मुरगे की चोंच एक अमरूद में होती, जैसे कि अमरूद खाकर ही उसकी यह हालत हुई हो । लोग बीमारी के डर से अमरूद तोड़ने का इरादा छोड़कर वहाँ से लौट पड़ते । लौटते हुए यह और पता चलता कि अमरूदों के लिए जो टोकरी साथ लेकर आए थे, वह बंदर के सिर पर है और बंदर एक मसखरे की तरह आवाज़ें पैदा करता पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर बैठ टाँगें हिला रहा है ।

इस तरह वे मज़े में दिन काट रहे थे कि एक दिन खूब घनी घटा घिर आई । पहले मूसलाधार वर्षा हुई, फिर ओले पड़ने लगे । जब उन तीनों ने साथ मिलकर अपना-अपना बचाव करने की योजना बनाई थी, तब इस दिन की बात नहीं सोची थी । पेड़ अपनी जगह परेशान था । ओलों से उसके सब अमरूद नष्ट हुए जा रहे थे । बंदर का अपनी जगह भीग-भीग कर बुरा हाल था । ऊपर से ओलों की मार उसकी जान ले रही थी । मुरगे की अपनी जगह खस्ता हालत थी । वर्षा से भारी होकर उसके पंख ही नहीं खुल पा रहे थे । ऊपर से ओलों की झड़ी उस पर गोलियाँ दाग रही थी ।

ये दोनों छुटकू किसी काम के नहीं, पेड़ ने झल्लाकर सोचा, ''मैंने आज तक हर मुसीबत में इनकी जान बचाई है, पर आज मुझ पर इतनी बड़ी मुसीबत आई है, तो इन्हें अपनी-अपनी पड़ी है । एक बार मेरा हाल तक नहीं पूछा, मदद करना तो दूर रहा ।''

''मैंने भी क्या साथी चुन रखे हैं ?'' बंदर ने ठंड से काँपते हुए अपने से कहा । ''एक पेड़ है जो जमीन में गड़ा होने की वजह से सुरक्षित है । दूसरा पक्षी है जिसे आकाश में उड़ सकने के कारण कोई खतरा नहीं है । आज तक मुझसे तो ये अपनी रखवाली कराते रहे हैं । पर आज मुझ पर इतनी सख्त मुसीबत पड़ी है, तो दोनों चुपचाप ताकते हुए मज़ा ले रहे हैं, कर कुछ नहीं रहे ।''

''बंदर का और पेड़ का तो हमेशा का साथ है,'' मुरगे ने त्योरी डाले हुए मन में कुड़कुड़ाना शुरू किया । ''मैं क्यों बेवकूफ़ बन कर इन देनों के बीच फँसा हूँ ? आज तक मैं तो इनकी हर मुसीबत को अपनी मुसीबत समझता आया हूँ । पर आज जब मेरी जान पर बनी है, तब दोनों को जैसे मेरा पता ही नहीं है । मज़े से बारिश में नहा रहे हैं और मेरी बात तक नहीं पूछ रहे ।''

तीनों इतने नाराज़ थे कि आपस में उन्होंने बात तक नहीं की । पेड़ चुपचाप अपने अमरूद नष्ट होते देखता रहा । बंदर चुपचाप ठिठुरता रहा । मुरगा चुपचाप कुढ़ता रहा ।

थोड़ी देर में ओले थम गए । बारिश भी रुक गई । पर तीनों में फिर भी कोई बात नहीं हुई । पेड़ को चिढ़ हो रही थी कि उसके इतनी बारिश झेलने के बाद भी बंदर उस पर बोझ बनकर लटका है । मुरगा उसके तने से अपने पंख खुजला रहा है । बंदर को गुस्सा आ रहा था कि उसे तो ठंड के मारे सन्निपात हुआ जा रहा है और पेड़ है कि अब भी उस पर बूँदें टपका रहा है । मुरगा है कि अब भी पंखों से छींटें ऊपर उड़ा रहा है । मुरगे को कुढ़न हो रही थी कि पानी की मार से उसका तो जिस्म जवाब दे रहा है और पेड़ ने ज़रा-सी भी ज़मीन उसके लिए सूखी बचा कर नहीं रखी । बंदर से इतना तक नहीं हो रहा कि उसे वहाँ से किसी और सुरक्षित जगह पर ही पहुँचाया जाए ।

अगले रोज तक पेड़ की टहनियाँ सूख गईं । बंदर का जिस्म सूख गया । मुरगे के पंख सूख गए । मगर तीनों ने आपस में फिर भी कोई बात नहीं की । पेड़ सोचता रहा, ''अब आए इन दोनों पर कोई मुसीबत, तो देखूँगा अपने को कैसे बचाते हैं । मैं अब इनकी कोई मदद नहीं करने का ।'' बंदर भी यही सोचता रहा, मुरगा भी ।

उसी रोज एक कसाई आया । वह मुरगे की तरफ़ बढ़ा, तो पेड़ ने अमरूद नहीं टपकाए । न बंदर ने मुरगे को अपनी पीठ पर लिया, न ही कसाई का थैला उड़ाया । मुरगा कसाई के थैले में बंद हो गया तो दोनों ने सोचा, ''अब पता चलेगा । बड़ा मुरगा बना फिरता था !'' कसाई मुरगे को लेकर चला गया ।

अगले रोज़ चिड़ियाघर से लोग आए । उन्होंने बंदर को पकड़ने के लिए जाल बिछाया तो पेड़ चुपचाप दूसरी तरफ मुँह किये रहा । बंदर उसकी ऊपर की टहनी की तरफ़ लपका तो पेड़ ने वह टहनी ही टूट जाने दी । थोड़ी देर में बंदर जाल में था और चिड़ियाघर के लोग उसे घसीटते हुए लिये जा रहे थे । पेड़ ने उसकी यह हालत देखी तो मुसकरा दिया । मन में उसने सोचा, ''अब रात-दिन पिंजरे में रहना पड़ेगा तो इसे होश आएगा । बड़ा बंदर बना फिरता था !''

उससे अगले रोज बहुत से लोगों ने पेड़ को घेरा डाल लिया । पेड़ ने सहम कर देखा कि उनके पत्थरों और डंडों का कोई जवाब उसके पास नहीं है । ताड़-ताड़-ताड़-थोड़ी ही देर में उसके सारे अमरूद झाड़ लिये गये । फिर किसी ने कहा कि पुराना पेड़ है, इसे काटकर इसकी लकड़ी जलाने के काम में लानी चाहिए । एक आदमी के पास कुल्हाड़ी थी । बस, उसी समय पेड़ की जड़ पर कुल्लाड़ी चलने लगी । थोड़ी देर में अमरूद टोकरियों में भर कर जा रहे थे और पेड़ की लकड़ियाँ लोगों के कंधों पर लदकर ।

एक गिलहरी वहीं रहती थी । मुरगे, बंदर और पेड़ की आपसी योजना और एकता पर वह चकित हुआ करती थी । उसने मुरगे और बंदर के बाद पेड़ को इस हालत में जाते देखा तो लंबी उसाँस के साथ मन में बोली, ''जा रहा है यह भी लोगों का चूल्हा जलाने । बड़े दोस्त बने फिरते थे ।''

विचारबोध :- हिन्दी नाटक साहित्य में मोहन राकेश का अपना एक विशिष्ट स्थान है । इनका जन्म पंजाब में हुआ लेकिन इन्होंने हिन्दी में ही लेखन कार्य किया । 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' तथा 'आधे अधूरे' इनके प्रमुख नाटक हैं । कहानी साहित्य में भी इनका अपना महत्वपूर्ण स्थान है ।

एकता ही बल है । परस्पर स्नेह और सहयोग के बल पर किसी भी संकट का सामना किया जा सकता है और जीत भी हासिल की जा सकती है । लेकिन गलतफहमी दोस्ती को दुश्मनी में बदल देती है । असहयोग एंवं ईर्ष्या विनाश को स्वागत करते हैं । प्रस्तुत कहानी इन दोनों दिशाओं की ओर संकेत करती है ।

- शब्दार्थ -

होश भूल जाना - सुध-बुध खो देना । मुँह बिचकाना - चिढ़ाना । जान पर बन आना - जान जाने का डर होना । सन्निपात - तेज़ ज्वर । मसखरा - हँसोड़, ठठ्ठेबाज । मूसलधार वर्षा - तेज बारिश । हाल - अवस्था, दशा । मुसीबत - विपद । जिस्म - शरीर, देह । रोज़ - हरदिन । जवाब - उत्तर । घटा - बादल, मेघ । खस्ता - बुरा । मदद - सहायता । नाराज - अप्रसन्न, नाखुश, खफा । कुढ़ना - भीतर ही भीतर क्रोध करना । होश - चेतना, बोध । उसाँस - लंबी साँस । ठिठुरना - काँपना । इर्दगिर्द - आसपास ।

प्रश्न और अभ्यास

1. संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) ''एकता में शक्ति होती है''- पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए ।

(ii) मुसीबत के समय तीनों दोस्त किस प्रकार एक-दूसरे की मदद करते थे ?

(iii) बारिश के समय तीनों दोस्त क्या सोच रहे थे ?

(iv) चिड़ियाघर के लोग काले बंदर को क्यों पकड़ नहीं पाते थे ?

(v) अमरूद को मुर्गा और बंदर कैसे बचाते थे ?

(vi) इस कहानी का मुख्य संदेश क्या है ?

भाषा ज्ञान

2. क्या आप जानते हैं कि- ''क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण कहते हैं । क्रिया की विशेषता अर्थात् क्रिया कैसे, कब और कहाँ हुई ।

जैसे - मैं आपकी बात ध्यान पूर्वक सुन रहा हूँ ।

निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया विशेषण शब्दों को रेखाकिंत कीजिए -

(i) आज मुझ पर सख्त मुसीबत पड़ी है ।

(ii) उन्होंने नीचे सामान रख दिया ।

(iii) दोनों चुपचाप ताकते हुए मजा ले रहे थे ।

(iv) बंदर उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटता है ।

(v) चारों तरफ भीड़ ही भीड़ थी ।

(vi) रोगी को तुरंत अस्पताल ले जाओ ।

(vii) मालिक को देखते ही नौकर जोर-जोर से चीखने लगा ।

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए -**
मुरगा, बंदर, गिलहरी, दादा, चौधरी, पंडित

4. इस पाठ से स्थानवाचक और कालवाचक क्रियाविशेषणों के तीन-तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए ।

5. 'मित्रता' विषय पर एक निबंध लिखिए ।

●